International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(6): 05-06

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(6): 05-06
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-09-2016
Accepted: 03-10-2016

विमल किशोर ढौडियाल
संस्कृत–विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
विमल किशोर ढौडियाल
संस्कृत–विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

भाट्टमीमांसा में नवम शताब्दी के उपरांत प्रमेय–चिंतन

विमल किशोर ढौडियाल

यज्ञीय मीमांसा एवं 'धर्म' के स्वरूप के निर्धारण को लेकर प्रवृत्त पूर्वमीमांसा दर्शन का प्रमुख उद्देश्य वेदंवाक्यार्थ निर्णय है। किन्तु तत्त्वमीमांसात्मक दृष्टि से भी मीमांसा दर्शन का भारतीय दर्शन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि जैमिनि सूत्रों में ही मीमांसा की तत्त्वमीमांसा का आरम्भ हो जाता है तथापि प्रमेयों की स्पष्ट झलक कुमारिलभट्ट के ग्रन्थों में प्राप्त होती है।

कुमाररिलोपरान्त भाट्टमत के प्रमेय पक्ष को प्रबल बनाने का श्रेय 'मण्डनमिश्र' को जाता है, जिन्होंने 'विधिविवेक' 'भावनाविवेक' 'विभ्रमविवेक' तथा 'मीमांसानुक्रमणिका' जैसे ग्रन्थों की रचना की।

मण्डनमिश्र कृत 'भाट्टमत' की पुनर्स्थापना को उम्बेकभट्ट एवं 'सुचरित मिश्र' आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे थे; लगभग उसी समय प्राभाकर सम्प्रदाय के यशस्वी विद्वान् 'शालिकनाथ मिश्र'[1] ने 'प्रकरणपंचिका' का प्रणयन कर भाट्ट मीमांसा का खण्डन एवं प्राभाकरमीमांसा को नवजीवन देने का सफल प्रयास किया। शालिकनाथ ने एक सच्चे शिष्य की भाँति प्रभाकर प्रतिपादित सिद्धांतों की रक्षामात्र नहीं की, अपितु विपक्षियों के आघातों से भी इसे सुरक्षित रखा। प्रकरणग्रन्थ 'प्रकरणपंचिका' का आरम्भ यद्यपि अध्ययन विधि से होता है, तथापि इन्हीं विधि, प्रमाण, आत्मविचार, वाक्यार्थगम आदि विचारों के बीच प्रस्फुटित प्रमेयचिंतन ने नवम शताब्दी में मीमांसा प्रमेयों को आगे बढ़ाया।

प्रो० रमेश भारद्वाज के शब्दों में ''जब चतुर्दिक् याज्ञिक, मीमांसा में शालिकनाथ मिश्र के पाण्डित्यपूर्ण वैदुष्य से अभिभूत होकर प्राभाकर मत का आश्रयण करने लगे थे तब भाट्टमत उपेक्षित–सा था, ऐसे समय में 'पार्थसारथि मिश्र' की शास्त्रदीपिका ने भाट्टमत को नवजीवन प्रदान किया।''[2]

'पार्थसारथि मिश्र' ने शास्त्रदीपिका तर्कपाद एवं अपने अन्य ग्रन्थ 'नयायरत्नमाला' में प्रसंगतः गुरूमत के अनेक सिद्धांतों को प्रस्तुत कर उनका खण्डन एवं स्वमत की स्थापना की है; इसी खण्डन–मण्डन परम्परा के कारण अत्यल्प प्रमेय चिंतन होने पर भी नवम शताब्दी के उपरान्त मीमांसा का प्रमेय पक्ष यौवनावस्था को प्राप्त होता हुआ प्रतीत होता है।

नवम शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक के प्रमेय चिंतन को इस काल के प्रमुख ग्रन्थों के द्वारा भलीभाँति समझा जा सकता है। जिनका वर्णन इस प्रकार है–

शास्त्रदीपिका

भाट्टमीमांसा में कुमारिल के समय से ही प्रमेयचिंतन का आरम्भ हो चुका था, किन्तु प्रमेयसम्बंधी जो स्पष्टता शास्त्रदीपिका में होती है वह पूर्व में दिखाई नहीं देती। प्रकृतग्रन्थ का तर्कपाद कुमारिल के श्लोकवार्तिक का सारगर्भित भाग है, जो भाट्टमत का निर्भ्रान्त रूप से परिचय कराता है। साक्ष्यों के आधार पर पार्थसारथि मिश्र का समय 1075 माना जाता है।[3] इस ग्रन्थ में प्रतिपादित प्रमुख प्रमेय सिद्धांत हैं–

- द्रव्य एकादश हैं
- पदार्थ पाँच हैं–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, आभाव।
- संयोग एवं तादात्म्य ही संबंध है। समवाय को संबंध नहीं माना जा सकता।
- कर्म प्रत्यक्ष है।
- आत्मा के विषय में 'पार्थसारथिमिश्र' ने 'आत्मवाद' प्रकरण में विस्तृत विवेचन एवं न्याय–वैशेषिक, वेदान्त–सांख्यादि मतों के खण्डनोपरान्त कुमारिल मतानुसार आत्मा को सिद्ध किया है।
- शब्दस्वरूप–वर्णात्मक शब्द नित्य एवं विभु द्रव्य है। ध्वन्यात्मक शब्द वायु का गुण एवं अनित्य है।[4]
- मोक्षविचार।
- प्रमाण प्रमेयों का संकलन।

शास्त्रदीपिका में 'औत्पत्तिक सूत्र' के आधार पर जो निरालम्बवाद, शून्यवाद, शब्द, अभाव, आकृतिवादादि का संग्रह किया है उनमें भी प्रत्यक्ष नहीं किन्तु परोक्षतया प्रमेयचिंतन निखर कर सामने आया है। शास्त्रदीपिका की उपयोगिता का ही कारण है कि इस ग्रन्थ पर चौदह विद्वानों ने टीका की रचना की है।

दीपिका

वरदराज कृत 'दीपिका'[5] मीमांसासूत्रों का व्याख्या ग्रन्थ होने के कारण प्रमेय चिंतन का प्रधान ग्रन्थ नहीं है, किन्तु प्रसंगप्राप्त शब्दादि प्रमेयों को ग्रन्थकार ने पूर्णतया स्पष्ट किया है। अतः तेहरवीं शताब्दी का यह ग्रन्थ पूर्णतया नहीं किन्तु आंशिकरूप से प्रमेयों को अवश्य दर्शाता है।

न्यायसुधा

सोमेश्वर भट्ट कृत न्यायसुधा मीमांसा के प्रमुख ग्रन्थों में अन्यतम है। न्यायसुधाकार ने पार्थसारथिमिश्र के समान ही कुमारिल मत से प्रमेयों को प्रस्तुत किया है। अपने प्रमेय चिंतन में सर्वत्र तौतातित मत का अनुगन करने के उपरान्त भी आत्मा के सन्दर्भ में राणकमत थोड़ा भिन्न है, इन्होंने वेदान्त के अनुसार आत्मतत्त्व को माना है।

नीतितत्त्वाविर्भाव

कुमारिल के श्लोकवार्तिक पर आधारित 'नीतितत्त्वाविर्भाव' में वेदों के 44 विषय सन्निहित हैं, एवं इन्हीं वेद विषयों के अन्तर्गत प्रमेयों का विवेचन किया गया है।

चिदानन्द पण्डित का उक्तग्रन्थ 'शास्त्रदीपिका' के इतना निकट प्रतीत होता है कि दोनों ग्रन्थों के प्रकरण एवं विषय–विवेचन क्रम प्रायः एक समान है। 'शास्त्रदीपिका तर्कपाद' से अत्यन्त साम्य होने पर भी 'नीतितत्त्वार्विभाव' में कुछ विशेषताएं दृष्टिगत होती हैं जो नवम् शताब्दी के उत्तरवर्ती प्रमेयविवेचन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चिदानन्द पण्डित के प्रमेयचिंतन की प्रमुख विशेषताओं को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है, यथा–

कालप्रत्यक्षतावादः मन से भिन्न एवं विभु होने के कारण कालप्रत्यक्ष द्रव्य है। [6]

मनोवैभववादः सखादि अपरोक्ष इन्द्रियत्वेन मन की सिद्धि होती है। मन सुखदुखादि उपलब्धि का साधन एवं विभु द्रव्य है। भाट्टमीमांसकों के अनुसार दो विभु पदार्थों का संयोग होता है, किन्तु यह संयोग एक विभु और एक सीमित पदार्थ का नहीं हो सकता। मन द्रव्य का विषय मात्र सुखदुखादि ही नहीं अपितु तत्तद् इन्द्रियों के द्वारा बाह्य पदार्थों का ग्रहण भी होता है।

कर्मप्रत्यक्षता [7]: कर्म प्रत्यक्ष है क्योंकि कर्मत्त्व का ज्ञान इन्द्रियों से होता है। जब इन्द्रियाँ सक्रिय होती हैं तभी कर्म का ज्ञान होता है, तथा जब इन्द्रियाँ निष्क्रिय होती है तो कर्मत्त्व का भान नहीं होता अतः इस अन्वयव्यतिरेक के द्वारा कर्म की प्रत्यक्षता स्थापित की जाती है।

तमोवादः चिदानन्द पण्डित द्वारा तम की द्रव्यत्त्व सिद्धि हेतु एक नवीन संकल्पना को जोड़ा गया है, इनके अनुसार तम की द्रव्यत्त्व सिद्धि के लिए वहाँ 'तामसपरमाणु' कारण होते हैं। तम का प्रत्यक्षत्व होता है। अन्य पदार्थों के चाक्षुषप्रत्यक्ष के लिए 'आलोकसहकार' की आवश्यकता होती है, किन्तु तम के चाक्षुषप्रत्यक्ष के लिए क्त आलोक सहकार की आवश्यकता नहीं होती।[8]

मानमेयोदय

अब तक वर्णन किए गए सभी ग्रन्थों में एक भी ऐसा ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता जो पूर्णतया समग्र प्रमेयों की व्याख्या करता हो यद्यपि 'नीतितत्त्वाविर्भाव' प्रमेयचिंतन को एक विशिष्ट क्रम अवश्य प्रदान करता है, तथापि वह समग्रतया एक प्रमेय प्रधान ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता। भाट्टमीमांसा में प्रमेयों का सटीक, क्रमबद्ध एवं सांगोपांग वर्णन करने वाला प्रथम प्रमेय–प्रधानग्रन्थ 16वीं शताब्दी में नारायणभट्ट प्रणीत 'मानमेयोदय' है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो 'नारायणपण्डित' (नीतितत्त्वाविर्भाव') ने पदार्थ विषयक अन्य मतों को प्रस्तुत किया है, किन्तु वेदान्तमत के अतिरिक्त किसी भी मत का खण्डन नहीं किया है। किन्तु मानमेयोदय का प्रमय–चिंतन मात्र प्रमेय निरुपण न होकर परपक्षखण्डनपुरस्सर स्थापित भाट्टमीमांसा के प्रमेयसिंद्धान्त हैं।

संदर्भ सूची

1. 825 ई० – CARL H. PORTER
2. प्रो० रमेश भारद्वाज–पार्थसारथि मिश्र का कर्म मीमांसा में योगदान
3. CAKLH. PORTER p. vixi
4. शास्त्रदीपिका – पृ०–28
5. निर्णय सागर प्रैस – 1956
6. कालः प्रत्यक्षः अमनस्त्वे सति विभुत्वाद् आत्मवत्, पृ०–34
7. नीतितत्त्व आविर्भाव – पृ०–1
8. नीतितत्त्व आर्विभाव – पृ०–57
9. अन्यत्रचाक्षुषप्रत्यक्षे आलोक – चाक्षुष एव कारणत्वम्–नीतितत्त्वार्भिभाव, पृ०–74